(5) लिक है कि बाण ने पद्य में भी कादम्बरी की कथा लिखी थी इनकी प्रसिद्ध रचनाएँ निम्नलिखित हैं —

(1) "चण्डीशतकम्" — इसमें भगवती की स्तुति सौ-श्लोकों में की गई है। यह पूरा शतक स्रग्धरा वृत्त में है। इसमें ओजोगुण की रमणीयता देखने योग्य है।

(2) "हर्षचरितम्" — संस्कृत साहित्य में यह सबसे पुरानी उपलब्ध आख्यायिका है। पहले दो उच्छ्वासों में बाण का आत्म परिचय। शेष छः उच्छ्वासों में सम्राट हर्ष का चरित दिया गया है। "ओजः समास भूयस्त्वमेतद् गद्यस्य - जीवितम्" - उस काल में गद्य का जीवन समास बहुलता माना जाता था। इसी साहित्यिक नियम के अनुसार इस - गद्यकाव्य की रचना की गई है।

(3) कादम्बरी — यह बाणभट्ट की सर्वोत्कृष्ट कृति है। इसके दो खण्ड हैं- पूर्वार्द्ध एवम् उत्तरार्द्ध। पूर्वार्द्ध शेष ग्रन्थ - का दो तिहाई भाग है, और यह बाण की रचना है। उत्तरा-र्द्ध पूरी कादम्बरी का तृतीयांश है। पिता के मर जाने - पर इस अंश की रचना कर पुलिन्दभट्ट ने कादम्बरी की - पूर्ति की। कादम्बरी गद्य साहित्य का समुज्वल हीरक है। भाषा और भाव, शब्द और अर्थ दोनों का उचित सम्मि-लन इस गद्यकाव्य में लक्षित है। कादम्बरी रसिक-हृदयों को मत्त कर देनेवाली कादम्बरी है — मीठी-मदिरा है। पुलिन्दभट्ट का यह कथन प्रत्येक सहृदय-के विषय में चरितार्थ हो रहा है —

"कादम्बरी रसभरेण समस्त एव
मत्तो न किञ्चिदपि चेतयते जनोऽयम्।"

एतदतिरिक्त - पार्वती परिणय एवं मुकुटताडिक को भी - कुछ विद्वान् बाणभट्ट प्रणीत मानते हैं।

बाणभट्ट सरस्वती देवी के वरदपुत्र थे। इनका गद्यकाव्य अपने विषय में अद्वितीय माने जाते हैं। - गोवर्धनाचार्य बाण को वाणी का साक्षात् अवतार - मानते हैं —

Scanned by CamScanner